॥ए०॥ अजियं जिअसव्वभयं। संतिं च पसंतसव्वगयपावं। जयगुरुसंतिगुणकरे दो वि जिणवरे पणिवयामि॥ गाहा॥ व्या०
अजिअंय॥ अजिअ अजितनाथ। किसिउ छइ जिअसव्वभयं जिअ कहीइं जीता सव्व कहीइं सघलाइं भय छइं जेणइं। संतिं च
शांतिनाथ। किसिउ छइ। पसंतसव्वगयपावं। पसंत कहीइं क्षय थ्या सव्व सघलाइं गय कहीइं रोग अनइ पाव कहीइं पाप छइं जे
हनइ॥ अजित शांति बिहु इ देव किसिआ छइं। जयगुरुसंतिगुणकरे जय कहीइं जगत्रह गुरु कहीइं गुरुई जे छइं शांति तेह
पा जे छइं गुण तेहना कर कहीइं करणहार। दो वि कहीइं बिहु जिणवरे तीर्थंकर पणिवयामि नमस्करउं॥१॥ ववगयमंगुलभावे ते
हं विउलतवनिम्मलसहावे। निरुवममहप्पभावे। थोसामि सुदि ट्ठसब्भावे॥२॥ गाहा॥ व्या० ववगय कहीइं गिउ मेल्हिउं विरूउ भाव अ
भिप्राय छइ जेहनउ। ते कहीइं अजित शांति। अरिहंत वंदि एकवि। विउल विस्तीर्ण जेहनइ तव तप तणइं करी निम्मल नि
र्मल। सहाव स्वभाव छइ जेहनउ। निरुवम उपमा नरहित। महा मोटउ प्रभाव महिमा छइ जेहनउ। थोसामि स्तविसु। सुदि
ट्ठा केवलज्ञानिइं करी सा बादीठा। सत कहीइं छता भाव कहीइं जीवाजीवादि पदार्थ छइं जेहनइ॥२॥ सव्वदुक्खप्पसंतीणं सव्व
वप्पसंतिणं। सया अजिअसंतीणं। नमो अजिअसंतिणं॥३॥ सि लोगो॥ सव्व समस्त घलाइं जे छइं दुःख तेहना पसंति कहीइं क्षय
छइ जेहनइ। सव्व समस्त घला पाव पाप तेहना कहीइं क्षय छइ जेहनइ। सया सदैव अजिअसंताणं अजिअ शांति प्रति नमो नमस्कार हुउ॥ अ
जिअ कहीइं रागादिक अजीता संति कहीइं क्षमा छइ जेहनइ॥३॥ अजिअजिण सुहप्पवत्तणं। तव पुरिसुत्तम नामकित्तणं। तह य धिइमइप
वत्तणं तव य जिणुत्तम संतिकित्तणं॥४॥ मागहिआ॥ अजिय॥ व्या० हे अजितजिन सुह सुख तेहनउं पवत्तणं करणहार। पुरिसुत्तम पुरुषमाहि उत्तं
उत्तम छइ तव ताहरउं नाम कित्तणं नामनउं कहिवउं तेतह य कहीइं तिम धिइ समाधि मइ मति तेहनउं पवत्तणं करणहार। तव य कहीइं ताहरउं
जिणुत्तम। जिन माहि श्रेष्ठ लगउ। हे शांतिनाथ कित्तणं नामनउं कहिवउं॥४॥ किरिआविहिसंचिअकम्मकिलेसविमुक्खयरं। अजिअं निचिअं च

गुणेहिं महामुणिसिद्धिगयं। अजिअस्स य संतिमहामुणिणो वि अ संतिकरं। सययं मम निव्वुइकारणयं च नमंसणयं॥४॥ आलिंगणयं॥ व्याख्या॥
किरिआ काइअ अहिगरणि आइत्यादि करणक्रिया तेहना भेद कहइ। इंद्रादेवताई करी मंत्रिअमा बिउ उपार्जितं जे छइ। कर्मज्ञानावरण
दिणादि अतइ किलमक हइ। इक षायतेहनउ विछेदक कहइ। मल्लविवज्ञातयर कहइ करइ छइ। अनि अपरदर्शनी देवतादि
वा न उपर्जी तउ नवी। ईश्वरादिकादेववादिवाना उपनउ। अधिकउ फलदिइ छइ। निविय चू कहइ व्यापि उं छइ। किसिइं क
रीगुणेहिं। सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रादिक गुणे करी। महामुणि माटाज्ञबि तेहनी सिद्धि अणिमादि रूपा। महिनि ही गयं कहइ। इ उत्ता अ
अजियस्स य अजितनाथनउ संति कहइ इथी शांतिनाथ। किमि उं छइ महामुणिणो। महाज्ञानी तेहनउं संतिकरं शांतिनउं करणा
हार। सययं सादैव मममइ रहिं निवुइ कहइ मुक्ति तेहनउं कारण हउ। नमंसणयं नमस्कर तेउं॥४॥ पुरिसा जइ दुरकवारणं
जइ विमग्गह सुहकारणं। अजियं संतिं च भावउ। अभयकर सरणं पवज्जहा। दमागहिया॥५॥ व्याख्या॥ हे पुरुषा जइ अइ
दुरकं दुःखातेहनउं वारण वारिवउं वांछउ। अनइ जइ विमग्गह कहइ वांछउं सुखवा मोख्य तेहनउ कारण हेउ तउ अजि
यं अजितनाथ। अनइ संतिं च शांतिनाथ। भावउ भावतउ। अभयकर निर्भयपणानां कारण। सरणं सरणं पवज्जहा पडिवजउ। आद
रि दिउदवउ करनवी वरपणक रउ जनम्बा॥५॥ अरइ रइ तिमिरविरहियमुवरयजरमरणं। सुर असुर गरुल भुयगवइ पयय
पणिवइयं। अजियमहमवि य सुनयनयनिउणमभयकरं। सरणमुवसरिय भुवि दिविजमहियं सययमुवणमे॥६॥ संगयं॥ अरइ
कहइ संयम नइ विषइ अरति रइ कहइ असंयम नइ विषइ ममता। तिमिर अज्ञानतांणइ करी विरहियं कहइ रहित छइ। उ
वरय उ रहियां जरमरणं जरा मरण छइ जेहरहिं। सुर देव असुर भवनपति। गरुल सुवर्णकुमार। भुयग नागकुमार। ताहनां वइ कहा
पतिइं तेहणं पणिवइयं नमस्करिउ छइ। अजियं अजितनाथ। अहमवि य हुं पुण। सुनय कहइ आनंनि व्या यात्तेगमादि

काजस्तनउं नय जाणा। विचउं। तेहनइ विषइ निउण निउणं। अभयकरं निर्भयपणानउ करणहार। सरण भवसरिया। सरणे जइ भुवि
दिवि जाइ हो। जबि उत्थानक्रि जोडइ। भुवि जइ मनुष्य दिवि जा देवता हमहियं पूजिउ। सययं निरंतर। उवणमे नमस्करूं॥६॥ तं च जिणुत्तममु
त्तमनित्तमसत्तधरं। अज्जवमद्दवखंतिविमुत्तिसमाहिनिहिं। संतिकरं पणमामि दमुत्तमतित्थयरं। संतिमुणी मम संतिसमाहिवरं दिसउ॥७॥
सोवाणयं॥ तं च कहइ शांति जगमाहि। प्रसिद्ध जिणुत्तमा तीर्थंकर। उत्तमसत्तधरं नित्तमा। अज्ञानरहित मध्य रं मद्धरइ छइ। अज्जव निर्माय
पणउं। मद्दव निरहंकारपणउ। खंति क्षमा। विमुत्ति निर्लोभपणउं। समाहि समाधि तेहनउ निहि तनि धनि। संतिकर। शांति नउ करणहार। प
णमामि नमस्करिइ दमइंद्रियनउ जय। ताणइं उत्तम प्रधान तित्थयरं तीर्थंकर। संति शांतिनाथ। मुणी कहइ सर्वज्ञ। मम मकरहिं। संति
शांति। अनइ समाधि तेहजि वरं वांछिता दिसउ दिउ॥७॥ सावत्थि उच्चपत्थिवं च वरहत्थिमत्थयपसत्थविच्छिन्नसंथियं। थिरसरिच्छवच्छं
।मयगललीलायमाणवरगंधहत्थिपत्थाणपत्थियं। संथवारिहं। हत्थिहत्थबाहुं। धंतकणगरुअगनिरुवहयपिंजरं। पवरल
क्खणोवचियसोमचारुरूवं। सुइसुहमणाभिरामपरमरमणिज्जवरदेवदुंदुहिनिनायमहुरयरसुहगिरं॥८॥ वेड्ढओ॥ सावत्थि। आव
स्ती अयोध्या नगरी। तेहनइ पुव्वपत्थिवं पहिलं राजा। वासरवातइ अधिवर प्रधान। जे वइ हत्थि हस्ती। तेहनउ मत्थय मस्तक तेहनी परि
इं पसत्थ प्रधान विच्छिन्न विस्तीर्ण संथियं संस्थान बैठा। थिर कठिन। सरिच्छ सम उं वच्छ हृदय छइ। जेहनउं। मयगल मदवंत। लीलायमाण
लीलाकरतउ। वर प्रधान गंधहत्थि गंधहस्ती। तेहनी परिइं जे पत्थाण कहइ गति तेणइं करी। पत्थियं कहइ चालिउ। संथव
कहइ स्तविवा उ तेह रहिं अरिहा योग्य। हत्थि हस्ती तेहनउ हत्थ सुंढि तेहनी परिइं। सरल थूलबाहू छइ जेहना। धंतकमि उं कण
ग सुवर्ण। तेहनउं रुयग। आभरण विशेष। तेहनी परिइं निरुवहय निर्मल कांति पिंजर पीत वर्ण छइ। पवर प्रधान। लक्खण व्यंचि यउ
चक्र अंकुशादि लक्षण करी सहित। सोम सोम्य चारुरूव मनोहर रूप छइ। जेहनउं। सुइ श्रुति कानां। तेह रहिं। सुह सुखनी करणहार। मण

Digitized with financial assistance from the
Government of Maharashtra
on 11 June, 2017

उणाहिं महामुणि सिद्धिगयं। अजिअस्सय संतिमहामुणिणो वि अ संतिकरं सययं मम निव्वुइकारणयं च नमंसणयं॥५॥ आलिंगणयं॥ व्याख्या॥
किरिआ काइअ अहिगरणि आइत्यादि करयक्रिया तहना बिहिं कहइ। इं न दतातह करा मंत्रि अमा विउक पालि उं जेवइ। कर्मज्ञानावरण
दिपलद अतइ किलम कहइ। इकपायतहनउ विउरक कहीइ। मल्लविव ज्ञातयर कहीइ करइ वइ। अनि अपरदर्शनी देववादि
वान उपएपजीतउन घा। ईश्वरादि कादेववादि वा ना उपएपतउ। अधिक उफलदिइ छइ। निविय वक कहीइ व्यापिउ वइ। किसिइंक
री गुणाहिं। सम्यगदर्शन ज्ञान चारित्रादिक गुणे करी। महागुणी माटा कहियतहनां। सिद्धि अणिमादिक ठामिहिनि होगयं कहीइ गुरुउत अ
अजियस्सय अजितनाघनउं संतिकहीइ श्री शांतिनाघ। किमि उवइ महामुणिणो महाज्ञानी तहनउं संतिकरं शांतिनउं करण
हारा सययं सादेव समसमकरहिंति वुइ कहीइ बकितहनउं कारणहउ। नमंसणयं नमस्करेवं उ॥५॥ अरिमाजइ उरक वारणा
जइ विसगाह सुरक कारणा। अजिय संतिच नावउ। अनयकार सरणंपवज्जहा॥६॥ मागाहिया॥ व्याख्या॥ हे पुरुषा जइ आह
दुरकाउः खातहनउ वारण वारिव उवा बउ। अनइ जइ विम गाह कहीइ वोबउं अरवामो रव्यातहनउ कारणहवा तउ। अजि
यं अजितनाघ। अनइ संतिच शांतिनाघ। नावउ नावतउ। अनय कार निर्भयपणना कारण हार सरणं सरणी पवज्जह पडिवजउ॥६॥
बिहि इदहएवकाग्स्त्रवीहवइ पकिक उज्जउस्तवइ॥ अरइरइ तिमिरविरहीय मुवरयजरमरणं। सुर असुर गरुल भुयगवइ पयय
पणिवईयं। अजियमहमविय सुनयनयनिउणमभयकरं। सरणमुवसरिय भुवि दिविजमहीयं सययमुवणमे॥७॥ संगयं॥ अरइ
कहीइ संयमनइ विषइ अरति रइ कहीइ असंयमनइ विषइ समताधा तिमिर अज्ञानताणइ करी विरहीय कहीइ रहितछइ। उ
वरय उवरियं जरमरणं जरामरण बइं जेहरहिं सुरादेव असुर भवनपति। गरुल सुवर्णकुमार भुयग नागकुमार तातहनावइ कहीइ
[illegible] पतिइं ज्ञातहं पणिवइयं नमस्करिउ छइ। अजियं अजितनाघ अहमविय हुं पणि उनय कहीइ ज्ञाननव्या व्रतिगमादि

कालहनउं नय जाणवि वतातहनइ विषइ निउण निपुणं। अनयकरं निर्भयपणानउ करणहार। सरणं उवसरिया शरण जई भुवि
दिजाहहा जबिजुधानकि जाउइ। भुवि जइ मनुष्य दविजा देवता हमहियं सविउ। सययं निरंतर। उवणमे नमस्करुं॥७॥ तं च जिणुत्तम मु
त्तममनित्तम सत्तधरं। अज्जवमद्दवखंति विमुत्ति समाहिनिहिं। संतिकरं पणमामि दमुत्तमतित्थयरं संतिमुणी मम संतिसमाहिवरं दिसउ॥८॥
सोवाणयं॥ तंच कहीइ तत जगमाहि। पसिद्ध जिणुत्तम तीर्थकर। उत्तम प्रधान। नित्तम। अज्ञान रहित सत्तधरं सत्वधरइ छइ। अजव निर्मायि
पणउं मद्दव तिरहकारपणउं। खंति क्षमा। विमुत्ति निर्लोभपणउं समाहि समाधि। तहनउं निहि ते निधान। संतिकरं। शांतिनउ करणहार। प
णमामि नमस्करिइ। दम इंद्रियनउ जय ताणइ उत्तम प्रधान तित्थयरं। तीर्थंकर। संति शांतिनाघ। मुणी कहीइ सर्वज्ञ। मम मकरहिं संति
शांति। अनइ समाधिय तहजि वर चोखितादिसउ देउ॥८॥ सावत्थि उवपत्थिवं च वरहत्थि मत्थय पसत्थ वित्थिन्न संथियं। थिरसरिछवच्छं
मयगललीलायमाण वरगंधहत्थि पत्थाण पत्थियं। संथवारि हं। हत्थिहत्थबाहुं। धंतकणगरुयग निरुवहय पिंजरं। पवरल
क्खणोवचिय सोम चारुरूवं। सुइ सुहमणाभिराम परमरमणिज्ज वरदेवदुंदुहि निनायमहुरयर सुहगिरं॥९॥ वेढ्ढओ॥ साव
त्थी अयोध्या नगरी तहनइ पुर्व प्रधान पत्थिवं राजा चासरवानइं अथिवर प्रधान। जेवइ हत्थि हत्थी तहनउं मत्थय मस्तक तहनी परि
इं पसत्थ प्रधान विच्छिन्न विस्तीर्ण संथियं संस्थानवंत। थिर कठिन। सरिछ समउं वच्छ हृदय छइ। जेहनउं। मयगल मदवंत लीलायमाण
लीलाकरतउ वर प्रधान गंधहत्थि। गंधहस्ती। तहनी परिइं जे पत्थाण कहीइ गति तेणइं करी पत्थिय कहीइ चालिउ। संथव
कहीइ वखांणिवदउ तहरहिं अरिहा याथ हत्थि हस्त। तहनउ हत्थ बिइ तहनी परिइं सरल प्रबल बाहू छइं जेहना। धंतधमिउं कण
गसुवर्ण। तहनउं रूयग। आभरण विशाष तहनी परिइं निरुवमहय निःकलंक पिंजर। पीतवर्ण छइ। पवर प्रधान। लक्खणा वचिय। व
चक्र अंकुश आदि लक्षण करी सहित सोम सोम्य चारुरूवं प्रधानरूपवंत छइ। जेहनउ सुइ श्रुति कानतहरहिं। सुहसुखनी करणहारा मणा

निरामममनरंसहंगमती॥परमरमणिज्ज॥अतिरमणीय॥वरश्रमनाजबइ देवनउ डुंडुहि-डुंडुभितहनउनिनाय निनादातहइतउमकुरयरश्र
तिमधुरसुहस्रुभकल्याणनीकरणहारगिरंवाणी॥जेहनी॥ ॥अजिअंजिआरिगणं।जियसव्वभयंभवोहरिउं।पणमामिअहंपयउ
पावंपसमेउमेनयवं॥ ॥रामाछहउ॥अजिअं।अजितनाथ किसिउछइ।जियारिगण।जीयजीत।अरिरागादिकवयरीतहनागण
सम्हछइजीणइ।जीयजीता।सर्वभयलाइस्यइजीणइ।भवोहसंसारनउवाहतेहनउरिउरिउडाल्हदणहार।पणमामिनमस्करूं
॥अहंहउं।पयउपयत्नवंतउतउ।पावंपापकर्मपसममेउहणिवा॥तउमममाहरूं।नयवंनगवंत॥ ॥कुरूजणवयहत्थिणाउरनरीसारा।प
ढमंतउमहाचक्कवहिभोगा।महप्पभावो।जोबावत्तरिपुरवरस हस्सवरनगरनिगमजणवयवईबत्तीसारायवरसहस्साणुआयमग्गो
चउदसवररयणनवमहानिहिचउसट्ठिसहस्सपवरजुवईण सुंदरवईछुलसीहयगयरहसयसहस्ससामी।छन्नवइगामकोडिसा
मीआसी।जोभारहंमिभयवं॥ ॥वहउ॥कुरूइसिइनामिइ॥ जणवयदेश।तिहांजेबइहत्थिणाउरइसिइनामिइनगर।तिहां
नरीसरराजा।पढमंपहिलउचक्कवर्तिबारसविइंमहाच क्कवट्टि।महाभोगउजेबइचक्रवर्तितेहनाभोगभोगविया।
महप्पभावउमोटउकहाइउसवातेहकरीआपणउजाबइकहइ। इंजबइछइराजाकहीइजबावत्तरिसहस्सनइविशालइजेपुरवरउ
इतबरानगरइहा।जोइइअर्थनइंमलइंबऊसरिसहस्सजेछइवरनगर।महानगरहत्थिणउरप्रमुख।निगमकहीइमादाविणिगना
स्थानजणवयदेशतेहनउवईपतिस्वामी।बत्तीसाबात्रीसाजबइरायवरमुकुटबद्धरायनामसहस्सा।सहस्रातेहआणआयअणुसरीमउ
मग्गकहीइसविमार्गछइजेहनउचउदसवररयणमहारत्ननवमहानिहिनवनिधानचउसट्ठिसहस्सपवरपरधानजुवईण।राजस्त्रीनउछंद
रनवईरसुछुलसीचउरासीयहयगयरहसयसहस्सलाखातेहनउसामी।स्वामी।छन्नवइछन्नुगामकोडिसामीस्वा
मी।आसी।हूउ।जोभारहंमिभरतक्षेत्रिभयवंभगवंत॥ ॥तंसंतिंसंतिकरंसंतिन्नंसव्वभया।संतिंथुणामिजिणं।संतिंविहेउमे॥ ॥रामानिर

ययं॥तंसंतिंशांतिकहीइजयशांतजिनप्रभुसंतिकरंशांतिनउकरणहार।संतिन्नंकहीइकृतरिवासव्वभयकहीइसभयथी।तेहनउउम
तिशांतिनामाथुणामिहउस्तवउजिणंतीर्थंकरसंतिंशांतिविहेउनोपजावउमममकरहिं॥ ॥इक्खागविदेहानरीसरनरवसहामुणिव
सहानवसारयससिसकलाणणा।विगयतमा।विहूयरया।अजिउत्तमतेयगुणेहिंमहामुणिअमियबला।विउलकुलापणमामितेभ
वभयभूरणजगसरणाममसरणं॥ ॥इहांकुवडाकयनउ।विदेहनरीसरा।विदेहादेशनउराजा।नरवसहा।नरमाहिवृषभसरीखउमु
णिवसहाउनिमाहिवृषभसमाना।नवनवउकृणिउसारयशारकालनउजेछइससिचंद्रमातेहनीपरिइंसकलआणनावदन।आणणमुखछ
जेहनइउ।विगयगितउतमअज्ञानाजेहतउ।विधूतास्फेडिउरयाक मेछइजाणइ।अजिआ।इअजितउत्तमप्रधानातेजछइ।जेह
नउ।किंसिइकरीगुणेहिं।गुणेकरी।महामुणिमहाऋषि।तेह अमियामबीअमकातउबलछइजेहनउ।विउलविस्तारमोट
उकुलकहीइवंशछइजेहनउ।पणमामिनमउंतेहभयभति इनबसंसारतेहनउजेछइनयातधरणकहीइफेडइछइजग
सरणाजगरहइशरणछइ।मममुझरहिंशरणंशरणहउ॥ ॥देवि शालस्मा॥ ॥देवदाणविदचंदसूरवंदहहतुहजिठपरमलठरूवधं
तरूप्पपहामअस्तुहनिद्धवलदंतपंतिसतिकित्तिमुत्तिजुत्तिगुत्तिपवरदित्ततेअवंदाधेयसव्वलोअभाविअप्पभावणेअपइसमउ
मसमाहिं॥ ॥नाराय॥ ॥देवादेवमानिकादेवता।दाणवभवनपतितेहना।इंदइंद्र।चंदचंद्रमा।सूरसूर्य।तेहरइ।हिवंदककाइ।वंदयह
हकहीइ।निरागा।तुहामाएवताजिहसाधाधायगुण।परमलहारूव।अतिप्रधानरूपछइजेहनउ।धंतधमिउ।रूप्परूपानहनउपहपाटतेह
नायरिइंसवइंछ।प्रधानसुहनिर्मल।निद्धस्निग्ध।धवलधउला।दंततातातेहनीपंतिकहीइपंक्तिश्रेणिछइ।जेहनइं।संतिशांतिनामा।सत्तिम
क्तिकिर्तिकार्ति।मुत्तिनिर्लोभपणउं।जुत्तिधर्ममार्गनउवचन।गुत्तित्रिणिगुप्तितेहकरी।पवरकहीइ।प्रधानदित्तादीपतउ।तेअतेज
तेहनउंचंदसमसहस्रलोअ।सव्वलोअ।सर्वलोकनाविअभाविउ।जबइ।प्पभावकहीइ।महिमातेणइंकरी।णेअजाणीतउछइ।

मेयं सरूवइ दिहिं समाहिं मम दिसउ॥४ विमलससिकलाइरेअसोमं। वितिमिरसूरकराइरेअतेअं। तिअसवइगणाइरेअरूवं धरणिधरप्पवराइ
रेअसारं॥५ कुसुमलया॥ विमल निर्मल जे छइ ससि चंद्रमा तेहनी तेहथी हुइं अइरेअ अधिक सोमा स कहीइ कांत सौम्य छइ वितिमिर क
हीइ गयउ तिमिर अंधकार करी रहित जे छइ सूर कहीइ सूर्य तेहतणउ अइरेअ अधिक तेअ तेज छइ जेहनउं तिअसवइ इंद्र तउ गण समूह तेह
तणइं अइरेअ अधिक तं रूप रूप छइ। जेहनउं धरणिधर कहीइं पर्वत तेहमांहि पवर प्रधान कणाचल मेरुपर्वत तेहथइ पहइं अइरेय
अधिक तं सार बल छइ जेहनउं॥५ सत्ते अ सया अजियं सारीरे अ बले अअजियं तव संजमे अ अजियं। एस थुणामि जिणं अजियं॥
सत्ते अ कहीइ सत्त्व इं करी सया सदैव अजियं कुणइं जीतउ नथी। सारीर बली सरीरनइ बलइं अजियं अजाणी जीतउ छइ। तव संयम बार
भेद तप सत्तरभेद संयम तेहमां करी अनेरइं कुणइं अजि यं जीतउ नथी। एस अहं थुणामि स्तवुं छुं जिणं तीर्थंकर अजियं
अजितनाथ॥६ सोमगुणेहिं पावइ न तं नवसरयससी। तेअ गुणेहिं पावइ न तं नवसरयरवी। रूवगुणेहिं पावइ न तं तिअसग
णवइ सारगुणेहिं पावइ न तं धरणिधरवई॥७ खिज्जइयं॥ सोम्य पणा न गुणइं करी पावइ न कहीइ न पहुचइ तं कहीइ ते अजि
तनाथ रहिं नव नवउ सरत कालनउ ससी चंद्रमा। ते अ गुणेहिं तेज गुण करी पावइ न कहीइ न पहुचइ तं अजितना
थ नइ नवउ सरत कालनउ रवि सूर्य। रूवगुणेहिं रूप गुण करी। पावइ न पहुचइ तं कहीइ अजितनाथ ते अरहि
। तिअसगणवई इंद्र। सारगुणेहिं स्थिरता गुण करी पावइ न तं अजितनाथ रहिनइ पहुचइ धरणिधरवई कहीइ मेरु॥७ तित्थवरपव
त्तयं तमरयरहियं धीरजिणथुअच्चियं चुयकलिकलुसं संतिसुहप्पवत्तयं तिगरणपयउ संतिमहं महामुणिं सरणमुवणमे॥८ ललिय
यं॥ तित्थ कहीइ चतुर्विध श्रीसंघ कि सिउ छइ तीर्थ प्रवर प्रधान। तेहनउ प्रवर्त्तावणहार। तम दीनपणउं रय रज कहीइ ताप। तेह क
री रहित। धीर कहीइ पंडित जे छइ जनगणा। तेहे थुय स्तवित स्तवन करी। अच्चिअ अर्चित पूज्या। दिक करी। चु 3

य कहीइ गिया। कलि वयर कलुस पाप। तेह छइ जेहनउ ते। संति। शांति कहीइ समाधि। तेहनउ सुख। तेहनइ कारणि। प्रवर्त्तक छइ।
यालइं छइ। अथवा संनि सुहप्पवत्तयं। ए पदनउ बीजउ अर्थ छइ। संति कहीइ क्षमा तेहरूप सुख तेहनउं प्रवर्त्तयं देणहार छइ। तिग
रण कहीइ मन वचन काया। तेह करी पयउ कहीइ प्रयत्न। संति शांतिनाथ अहं हउं। महामुणिं महामुनि। सरणं शरण उवणमे आश्र
यिउं॥८ विणओणयसिररइयंजलि रिसिगणसंथुयं थिमियं। विबुहाहिवधणवइनरवइथुयमहियच्चियं बहुसो अ
महियच्चियं बहुसो। अइरुग्गयसरयदिवायरसमहियसप्पभं तवसा। गयणंगणवियरणसमुइयचारणवंदियं सिरसा॥९ किसलयमाला॥
विणय विनय ताणइं करी उणय कहीइ नमिया जे छइ सिर मस्तक तिहां रइय तापइ। जाविउ अंजलि हाथ जोडिवउं छइ जेह।
ए वा रिसिगण कहीइ ऋषिसमूह तेहे संथुयं स्तविउ। थिमियं थि र पणइं करी निश्चल छइ। विबुहाहिव इंद्र धणवइ कुबेर नरव
राय तेहे थुय स्तवन करी स्तविउ। महिय नमस्करिउ। अ णमादिक करी अच्चिय पूजिउ। पुष्पादिक करी बहुसो घ
णी वार। अइरुग्गय नवउ ऊगिउ सरय सरत कालनउ दिवा यर सूर्य। तेहतउ समहिय अधिकी सप्पभा प्रभा दीसइ छइ।
जेहनी। तव सातपइं करी गयणंगण विहरण कहीइ आकासि मार्गि चालिवउं तेणइ समुइय सहित जे छइ चारण कहीइ चारण श्र
मण तेहे वंदिउ सिरसा मस्तकि इं करी॥९ असुरगरुलपरिवंदियं। किंनरोरगनमंसियं। देवकोडिसयसंथुयं समणसंघपरिवंदियं॥
१० सुमुहं॥ असुरकुमार गरुल सुवर्णकुमार तेहे परिवंदिय वांदिउ। किंनर उरग व्यंतर विशेष तेहे नमंसीयं नमस्करिउ। देवविमा
निक देवतां तेहनी कोडि तेहनां सइं सइंकडा तेहे संथुय स्तवउ। समणसंघ महात्मा समस्त तेणइं परिवंदियं सर्व प्रकारिइं स्तविउ॥१० अ
भयं अणहं अरयं अरुयं अजियं अजियं पयओ पणमे॥११ विज्जुविलसियं। त्रिनि विशेषका। अनय सप्तविध भय करी रहित। अण
ह पापरहित। अरयं। मिथ्यात्व रहित। अरुय नीरोग। अजियं कहीइ बाह्य अंतरंग वयरीए। जीतउ नथी। अजिअं अजितनाथ पयउ प

त्रवंत ऊत तयणा महं तं। अरण मउं। अरणमउं। मरहवइ कलापकिइं करी अवइ छइ। आगया वरविमाणे आव्या एहनउ संबंध। जं सुर संघाईण अगि
लागा हइं मिलमिइ जे हूं श्री शांतिनाथ नइ समीपि देव आव्या किमिइं करी वरविमाण प्रधान विमान दिव्य देव संबंधीया। कणग सुवर्णमय रह
इं रह रथ तुरय तुरंगम। ते हना पहकर समूह सत सहस्र तेणे करी हुलियं उताविला। ससंभम उतावला उं। उयरण आकाश मार्गि तउ ऊतर
तां तेणइं करी खुभिय कहीइ संचलित हूंता। लुलिया लालाय माण चल चपल। कुंडल अंगय बहिरखा किरीड मउड। सोहंत शोभा
यमान मउलि मस्तक नी माला माल्य दाम छइ जेह ना॥२२॥ जं सुरसंघा सासुरसंघा वेरविउत्ता भत्तिसुजुत्ता। आयरभूसियसंभमपिंडियसु
ट्ठुसुविम्हियसव्वबलोघा। उत्तमकंचणरयणपरूवियभासुरभूसणभासुरियंगा। गायसमोणयभत्तिवसागयपंजलिपेसियसीसपणा
मा॥२३॥ रयणमाला॥ जं जेह कहइ सुरसंघा देवसमूह। किसा वइ सासुरसंघा। असुर समूह करी सहित ते वैरविउत्ता। वयर ना वि
इं करी रहित। आयर भूसिय। आदर करी भूषित। संभमपिंडिय॥ वेगिइं करी एकठा मिलिया। सुट्ठु सुविम्हिय विस्मयवंत।
सव्व बलोघा इ बल गज डरगमादिक कटक। ते हनउ उघ समूह छ। बइ जेहनइ। उत्तम प्रधान कंचण सुवर्ण रयण रत्न। तेहनां परूविय घटि
त ना सुरक लहलता भूषण आभरण। तेह करी। भासुरियंगा दीप्यमान अंग छइ। गाय समोणय सरीरइं करी नमिया। भत्ति वसागय भक्ति
इं वशि आविया। पंजलि हाथ मांथइ चडावी पेसी नाप जावि उ सीस मस्तिकिइं करी पणाम प्रणाम छइ जेहनइ॥२३॥ वंदिऊण थोऊण तो
जिणं तिगुणमेव य पुणो पयाहिणं। पणमिऊण य जिणं सुरासुरा पमुइया सभवणाइं तो गया॥ खित्तयं॥२४॥ वंदिऊण वांदी। थोऊण स्तवी
ताति वार स्तवि इं जिण तीर्थंकर। तिगुणमेव य तिणि वार उणा वलापयाहिणं प्रदक्षिणा देई आपणइ थानकि। जावा नइ अवसरि तीर्थं
कर तिगुणमेव य तिणि वार उणा वलापयाहिणं प्रदक्षिणा देई आपणइ थानकि। जावा तइ अवसरि। पणमिऊण य जिणं सुरासुरा पमुइया
सभवणाइं तो गया॥ खित्तयं॥२४॥ वंदिऊण वांदी। थोऊण स्तवी। ताति वार स्तवि इं जिण तीर्थंकर। तिगुणमेव य तिणि वार उणा वलापयाहिणं

दक्षिणा देई आपणइ थानकि। जावा नइ अवसरि। पणमिऊणय प्रणाम करी जिणं॥ जिनइ सुरासुरा देव दानव पमुइया हर्ष्या हूंता स
भवणाइं आपणा घर। तो तिवार गया॥२५॥ तं महामुणिमहंपि पंजली। रागदोसभयमोहवज्जियं। देवदाणवनरिंदवंदि
यं संतिमुत्तममहा तवं नमे॥२५॥ खित्तयं॥ चउर्लिंक कलापक॥ तं ते शांतिनाथ महामुणि महंपि पंजलि अहंपि हूं पिण प्रांजली जोडी। राग
दोस। रागद्वेष भय मोह करी वज्जियं अरहित। देव दानव वैमानिक भवनपति। देव नरिंद राया तेहे वंदिअं वांदिउ छइ संति शांति
नाथ उत्तम प्रधान महा तव महातप नउ करण हार। नाम नमस्करउं॥२५॥ अंबरंतरवियारणियाहिं ललियहंसवहुगामिणियाहिं।
पीणसोणिथणसालिणियाहिं सकलकमलदललोअणियाहिं॥ दीवयं॥ अंबरंतर आकाशमार्गि वियारणियाहिं। चालइ छ
इं। ललिय प्रधान हंस वधू राजहंसी। तेहनी परि गामिणिआहिं गति करइ छइ। पीण पुष्ट जे छइ सोणि कटी प्रदेश अनइ थ
ण स्तन तेहे सालिणियाहिं शोभायमान छइ। सकलकमल लक कलीइ संपूर्ण जे छइ कमल दल तेहनी परि लोचन छइ ज
हनां॥२६॥ पीणनिरंतरथणहरविणमियगायलयाहिं मणिकंचणपसिढिलमेहलसोहियसोणितडाहिं वरखिंखिणिनेउ
रसतिलयवलयविभूसणियाहिं रइकरचउरमणोहरसुंदरदंसणियाहिं॥२७॥ चित्तक्खरा॥ पीण पुष्ट निरंतर हइं जेह नां थ
णस्तन ते हनउ भार तेणइं करी विणमिय नमी गाय लया शरीर छइ जेहनां। मणिमाणिक्य कंचण सुवर्ण तेहना पसिढिल कह
इं ढीला। जे मेहल कटिमेखला। आभरण तेणइं सोहिय शोभायमान। सोणि तडा हिं कटी प्रदेश छइ जेहनउ। वर प्रधान खिं
खिणि किंकिणी। नेउर झांझर। स तिलय। तिलक सहित वलय कडा। वलोया विभूसणियाहिं वेष अतेहना छइ जेहनइ। रइ कर समा
धि नउ करण हार चउर चतुर नइ मणोहर मन नउ करण हार। सुंदर प्रधान दंसण दर्शन छइ जेहनइ॥२७॥ देवसुंदरीहिं पायवं
दियाहिं वंदिया जस्स ते सुविक्कमा कमा। अप्पणो निडालएहिं मंडणोड्डणप्पगारएहिं। केहिं केहिं वी अवंगतिलयपत्तलेहिं।

[illegible] नामएहिं चिल्लएहिं। संगयंगयाहिं। भत्तिसंनिविट्ठवंदणागयाहिं। हुंति ते वंदिया पुणो पुणो॥ नारायओ॥ थाठिली बिक्क
गा॥ स्वसीवीया। देवसुंदरीहिं। देवांगनाए। किसी छइ। पायवंदियाहिं। श्रयरनइ आचरणनी कांतिनां समूह छइ जेहनइ। वंदिआ वांदि
या जस्स जेहना। ते जगवदाता सुविक्कमा अतिबलवंत कमा कहीइ पग। किसिइं करी वांदिया। अप्पणो निडालएहिं। आपणे निडाले
करी मंडणोड्डण कहीइ सयरि मांडणानी रचना। तेहनइ प्पगारएहिं कहइ। इसा प्रकार करी। केहिं केहिं वि अवं। केहा केहा तेत कहइं। अ
वंग कहीइ लोचननां अंत आंजणानी रचना। तिलक टीला। पत्रलेहा कस्तूर्यादिकनां सयरि रचवानां नामएहिं कहीइ। इत्यादिकनां नाम छ
इ जेहनइ। चिल्लएहिं कहीइ देदीप्यमान छइ। संगयंगयाहिं सं मांडणानी रचनाइं करी सहित। अंग कहीइ सयरनां अवयव छइ जे
हनां। भत्तिसंनिविट्ठ भक्तिइं करी सम्यक् वंदण वांदिवा तेहनइ कारणि आगयाहिं आवी छइं। हुंति हुइं। ते तेहरा वि हइय
ग वंदिया वांदिया पुणो पुणो वली वली॥ नारायओ॥ तमहं जिणचंदं अजिअं जिअमोहं धुअसव्वकिलेसं पयओ पण
मामि॥ नंदिअयं॥ चउर्भिः कलापकं॥ तं ते अहं हउं जिणचंदं तीर्थंकर अजिअं अजितनाथ। जिअमोहं जीत्यउ मोह छइ
जेणइं। धुअ स्फेडिआ सव्व सघला किलेस क्लेश छइ जेणइं। पयओ प्रयत्न करी हउं आपणमामि प्रणमउं॥ थुअवंदिअ
स्सा रिसिगणदेवगणेहिं तो देववहूहिं पयओ पणमिअस्सा। जस्स जगुत्तमसासणअस्सा। भत्तिवसागयपिंडिअयाहिं। देववर
च्छरसाबहुआहिं। सुरवररइगुणपंडिअआहिं॥ भासुरयं॥ थुअवंदिअस्सा। स्तविउ अनइ वांदिउ छइ। ऋणइं रिसि ऋषि त
हना गण समूह। देव वैमानिकादिक तेहना गण समूह। तो ते वार पछी वलि इं देववहूहिं देवांगनाए पयओ। सावधानपणइ पण
मिअस्सा नमस्करिउ छइ। जस्स जेहना। जगुत्तम जगवइं प्रवर्तउं उत्तम सासण प्रवचन छइ जेहनउं। भत्तिवसागय भक्ति नइ आगिला
डा देवनहिं याहिं कहिउ छइ। तेहनां विशेषण कहीइ छइं देवनईं का। किसी छइ। भत्तिवसमनकिनइं वशि आणी छइ। आगइ॥ देव

लोकनउं। आविवउं तीणइं करी। पिंडिआहिं कहीइ एकठी। मिली छइ। देववरा नावरा ता रा वालता रा देवता अच्छरा अप्सरा रत्य क
ला कुशला छइ वागनानाहा। बहुआहिं घणी। सुरवर देवता मांहिं। वर प्रधान रइ गुण कामसुखना गुण। तेहनइ विषइ पंडिआहिं डाही
छइ॥ वंससद्दतंतितालमेलिए तिउक्खराभिरामसद्दमीसए कए अ सुइसमाणणे अ सुद्धसज्जगीअपायजालघंटिआहिं वलयमेह
लाकलावनेउराभिरामसद्दमीसए कए अ देवनट्टिआहिं हावभावविब्भमप्पगारएहिं नच्चिऊण अंगहारएहिं वंदिआ जस्स ते सुवि
क्कमा कमा तयं तिलोअसव्वसत्तसंतिकारयं पसंतसव्वपावदोसमेसहं नमामि संतिमुत्तमं जिणं॥ नारायओ॥ वंससद्द वांसनउ शब्द। त
ंति ताल मेलिए मिलिउ। तिउक्खर वाजित्रविशेष। तेहनउ अभिराम प्रधान सद्द शब्द तीणइं करी मीसए कए अ मिश्र कीधइ
इ छतइ। सुइ कहीइ काननउं समाणणे अ सर्व आदर मांहि लिवानइं। विषइ समक रिवउं तीणइं कीधइ छतइ। सुइ कहीइ का
ननउं समाणणे अ सर्व आदर मांहि लिवानइं। विषइ समक रिवउं तीणइं कीधइ छतइ। सुद्ध निर्दोष सज्ज नव आज वइं गी
अ गीत तेणइं सहित वइं। पाय जाल पग जालनइं आकारि घंटिआ। घूघरी वइं जेहनइं। वलय सुवर्णादि घटित वलीआं
मेहला कडिनउं आभरण कलाव आभरण विशेष। नेउर अ भिराम प्रधान सद्द शब्द तीणइं मीसए कए अ मिश्र कीधइ छतइ। देवन
ट्टिआहिं देवनर्तकीए हावभाव कहीइ कामविकार विब्भम विलास तेहना प्पगारएहिं प्रकार वइं तेहनइं। नच्चिऊण नाची। अंगहा
रएहिं प्रधान अंगना विक्षेप करी वंदिआ वांदिआ। जस्स तेहना। ते जगविदाता सुविक्कमा अतिबलवंत कमा पग। तयं ते। तिलोअ
त्रिणि जगत तेहनां सघला सत्त जीव तेहरइं संतिकारयं शांतिनउ करणहार वइं। पसंत क्षय गियां सघलां पाप अनइ दो
सा मद वइं जेहतइं ते एसहं तेहनइं। नमामि नमस्करूं। संति शांतिनाथ। उत्तम जिण तीर्थंकर॥ छत्रचामरपडागजूअजवमंडिया कयव
रमगरतुरयसिरिवच्छसुलंछणा। दीवसमुद्दमंदरदिसागयसोहिया। सत्थियवसहसीहरहचक्कवरंकिया॥ ललिययं॥ छत्र छत्र चामर च

मरवडागनाई।पताका।छत्र शंखईसर जवनउ अर्थप्रसिद्ध उछइ।तादमंडियाज्ञानायमाना।कयवरमहाध्वजामगर।तुरय तुरंगम।सिरिव
छश्रीवत्स।जहवउ उन्नमतुरुघनइहा।इकुंइ।सुलंछ।ण।इसियासुलक्षणछइजिहां।दीवसमुद्द होयमुडामंदरामरुपर्वत।दिसाग
यमाहिया।ज्ञा।नायमानामच्छियस्सत्थिकवसभहत्तुष्टसमीहरयवक्रवरप्रधानचक्र अकिया।तादकरीमहिता।।३२।।सहावलठासमप्पइ
ठा।आदामकुठा।गुणाहिंजि ठा।पमायम्मि ठा।तावणसुठा।सिरीहिंइठा।रिसीहिंजुठा।।३३।।वाणवासिया।।स्वनाविइप्रधान।समममीपइ
ठा।त्रमिकाइंरहवउछइ।जेहनउ।आदामकुठा।रूक्षअविषमवादिकदोषकरीकहिउनथी।गुणाहिंजि ठा।स्निग्धवस्तुका मलवादि
गुणकरीप्रधान।पमाउयमिठा।रागादिदोषनइक्षइकरीजे वडंनिर्मल।ईतिरूपप्रमादिइंकरीप्रधानछइ।तावणसुठा।तपिइंकरी
सुष्टा।सिरीइइठा।लक्ष्मीदेवताइंसजिया।रिसीहिंजुठा।ऋ षिइंसव्यमाना।।पुइअ तावणक्षयसछपावयामझाला अहिस्वलहा
यया।सत्तुआअजिअमंतिपायया।।कुंजमसिवछहाण दायया।।३४अपराजिता।।तकहाइंसर्विइंवसीविआ।तावण
पिइंकरीक्षयापफडियामहसमघलाइंपावपावछइजेहम ब्रमयलउाला।आलाकतहरदियहितउकवणामाक्षातहनउ
खलज्ञानदर्शनचारित्रतेहनादायया।देणहारसंघआस्तवि याकुंता।अजिअमंतिश्रीअजितशांतितहनापायया।पदक
मलकुंत्वामकुंउमकरहिंसिवसुहाणमाहनादायया।देणहारा।।३५एवंतवबलविउलंथुअंमयअजिअसंतिजिणजुयलंववग
यकम्मरयमलंगयंगयंमम्मयंविमलं।।३६गाहा।।एवंइस्यापरिइं।तवबल।तपबलइंकरीविउलंविस्तीर्णंथुअंस्तविउंमइं।अजिअ
संति।अजितशांतिजिणयुग।तीर्थंकरतेहनउंजुअलंजुगलजुगलं।ववगयगिउंकर्मज्ञानावरणीयादिकअष्टविधकर्मरयरजबध्यम
नकर्मरजकहीइंबांधवउंकर्ममलकहीइगिउंवइशाजहनउ।गइं।माक्षगतिइंगयगिउछइ।सासयंशास्वतीविउलंनिरुपमाना।।३७या।
तंबहुगुणपसायंमुक्खसुहेणपरमेणअविसायं।नासेउमेविसायं।कुणउअपरिसाविअप्पसायं।।३७गाहा।।तंतअजितनाथशांतिजिन

नउंजुअलकिसिउंछइ।बहुघणागुणज्ञानादिकतेहनउंप्रसायंनिर्मलपणउंछइजेहनइ।मुक्खसुहेणमोक्षनइंसुखिइंपरमेणउत्कृष्टइं।
अविसायं।विषादरहित।नासेउनासउमे।ममाहरउविषाद।कुणउकरउपरिसाविअप्पसायंअजितशांतिस्तवनासांभलणहारविहांसनासि
दोनाउणनइंसलवइं।दोषनइंठा।कवइं।प्रसादप्रसादकरु।३।।माहरुविषइं।३८तामोएउअनंदिपावउअनंदिसेणमभिनंदिं।परिसा
विअसुहनंदिंममदिसउसंजमेनंदिं।।३९गाहा।।तामोएउ।।तंतअजितशांतिजिनयुगलमोएउहर्षावउ।नंदिसहितया।वउ।आपकुं
वाउ।उ।नव्याख्याकरहिं।एतलउंअर्थतउलीजइ।नंदिसेणनंदिषेणकविरहिंअभिनंदिमर्वप्रकारसमृद्धिइंयुक्तथाउ।उ।परिसावि
अ।पस्तवननीसांभलणहारि।लोकसभाहिंसुहनंदिंसुखनाहे छिदिउ।इसिउअर्थतउ।जोहीइ।समममकुंतइंहेदिसउ।संजमेसंजमन
इविषइ।नंदिसमृद्धि।नासमृद्धि।नंदिषेणकविनउनिश्चयनही। ।नजाणीइं।अणिकश्चत्रअथवानेमिनाथनउशिष्य।नंदिषेण।।३९प
क्खिअअवाउम्मासिअसंवछरिएअवस्सभणिआवो।।सोअ द्धोसवहिंविउवसग्गनिवारणोएसो।।४०पक्खिअ।।इलगीहत्रि।
मासिअजिअमवउयतलाइजलगइवरकालिउवइ।आगिला विगाहाआनरानीकाधी।।तनरवाणीइंछइ।अतिप्रसिद्धतणीपक्खि
अपारवीचउम्मासिअचउमासिसंवछरीएसंवछरीपडिकम णइअवस्सअवश्यइंभणिअव्वोभणिवउ।सोअसोआलिवआस
वहिंविसकलश्रीसंघिइं।उवसग्गनिवारणोउपसर्गनउनिवारसहार।एसोएअजितशांतिस्तव।।४०।।जोपढइजोनिसुणइउभउकालं
लंपिअजिअसंतिथुअं।नहुहुंतितस्सरोगापुव्वुप्पन्नाविनासंति।।४१गाथा।।जोपढइ।जोअजितनिसुणइ।सांभलइ।उभउका
लंपिबिहुकालप्रभातिं।अनइंसाकइअजिअसंतिथुअअजितशांतिस्तव।नहुहुंतिनहुइं।तस्मात्तेहनिं।रोगा।रोग।पुव्वुप्पन्नाविसर्वि
इंऊपना।रोगनासंतिनासइ।।४१।।जइइच्छहपरमपयंअहवाकित्तिंसुवित्थडंभुवणे।।तातेलुक्कुद्धरणेजिणवयणेआयरंकुणह।।४२
जइजइजउइच्छहवांछउपरमपयंपरमपदअहवाअथवाकित्तिंकीर्तिसुविछडंअतिविस्तार्णभुवणजगमाहितातउतेलुक्कुद्धरणे

Digitized with financial assistance from the
Government of Maharashtra
on 11 June, 2017

त्रैलोक्यनाउ हरणहार जिणवयणं जिनवचननइं विषइ आयरं आदर करणहा॥४०॥ इति श्री अजितशांतिस्तवः अवचूरि समाप्ता शुभं ॥